ISSN 2320-4443

परामर्श

(हिन्दी)

भारतीय ज्ञानमीमांसा विशेषांक

(भाग-१)

अतिथि संपादक

डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा

खण्ड ३५ अंक १-४
दिसंबर २०१४ - नवंबर २०१५
भारतीय सौर मार्गशीर्ष - कार्तिक शके १९३६-३७
प्रकाशन वर्ष - मई, २०१८

दर्शनशास्त्र विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय प्रकाशन

डॉ. आम्बेकादत्त शर्मा

नमः प्रामाण्यवादाय मत्कवित्वापहारिणे

मनुष्य प्रेक्षावन्त प्राणी है। प्रेक्षावन्त मनुष्य से अवर स्तर के प्राणी भी होते हैं। परन्तु मनुष्य की विशेषता यह है कि वह अपनी प्रेक्षाओं के प्रति आत्मचेतन होता है। इस कारण वह प्रेक्षाओं की पूर्ति के लिए हेय और उपादेय बुद्धि पूर्वक अवांछित वस्तु की वर्जना और वांछित वस्तु को प्राप्त करने में प्रवृत्त होता है। इन दोनों प्रकार की प्रेक्षाओं का जो इष्ट है, उसमें प्रवृत्ति और उसकी सिद्धि के लिए उसका ज्ञान होना आवश्यक है। ज्ञान को इसीलिए व्यवहार मात्र के प्रति साधारण निमित्त कारण माना जाता है। परन्तु यह ज्ञान व्यवहार का निमित्त होते हुए भी प्रेक्षित वस्तु की सिद्धि हठात् नहीं कराता। उसकी भूमिका मात्र ज्ञापक की होती है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो ज्ञान प्रेक्षित वस्तु की सिद्धि का कारक हेतु नहीं बल्कि ज्ञापक हेतु होता है। यदि वह कारक हेतु होता तो किसी वस्तु को जानने का मतलब उसे प्राप्त करना भी होता। तब ज्ञान और उसके विषय की प्रापकता को लेकर व्यभिचार और अन्यथात्व की कोई सम्भावना ही नहीं बनती। इस तरह ज्ञान को लेकर प्रामाण्याप्रामाण्य की विवक्षा भी नहीं होती। परन्तु ज्ञान को लेकर प्रामाण्याप्रामाण्य की विवक्षा आवश्यक रूप से हुआ करती है, क्योंकि एक ओर वह प्रेक्षित वस्तु के प्रति ज्ञापक हेतु होता है और दूसरी ओर उसकी ज्ञापकता निःसंदिग्ध हो, यह आवश्यक नहीं। इस कारण व्यवहार में प्रेक्षित वस्तु कभी प्राप्त हो जाती है और कभी नहीं भी होती। वस्तुतः किसी भी ज्ञान में उसके स्वरूप की ज्ञापकता जितनी सुनिश्चित होती है उतना ही सुनिश्चित उसके विषय की ज्ञापकता नहीं होती। प्रामाण्य और अप्रामाण्य का प्रश्न किसी ज्ञान के स्वरूप की ज्ञापकता को लेकर नहीं बल्कि ज्ञान के विषय की सुनिश्चित ज्ञापकता को लेकर ही उठता है। इसीलिए ज्ञान का वह स्वरूप जिसमें उसके विषय की ज्ञापकता सुनिश्चित होती है, उसी में प्रामाण्य और जिसमें सुनिश्चित नहीं होती, उसमें अप्रामाण्य माना जाता है। ज्ञान के इसी प्रामाण्याप्रामाण्य के सापेक्ष इष्ट की सिद्धि और अनिष्ट का